एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

डेयरी मवेशियों और भैंसों में गर्मी के तनाव का प्रबंधन

(*डॉ. रविंद्र जादव[1] एवं डॉ. सचिन कलास्वा[2])
[1]सहायक प्रोफेसर, एम. बि. वेटेरीनरी कॉलेज, डूंगरपुर, राजस्थान
[2]सहायक प्रोफेसर, पशुपालन पॉलीटेक्नीक जी.वी.एम. संस्थान, शहेरा, पंचमहाल, गुजरात
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rjadav31@gmail.com

ग्रीष्म ऋतु में पशु प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उत्तर-पश्चिमी भारत में गर्मियाँ गर्म और लंबी होती हैं। यहां वायुमंडलीय तापमान 450 सेल्सियस से भी अधिक हो जाता है। इस मौसम में जानवर तनावग्रस्त हो जाते हैं। तनाव पशुओं के पाचन तंत्र और दूध उत्पादन प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस मौसम में नवजात पशुओं की देखभाल में थोड़ी सी भी असावधानी उनके भविष्य के विकास, रोग प्रतिरोधक क्षमता और उत्पादन क्षमता को स्थायी रूप से ख़राब कर सकती है। गर्मी के दौरान पशुओं के रखरखाव में अनुचित देखभाल से शुष्क पदार्थ की खपत में 10 से 30 प्रतिशत की कमी हो सकती है और पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता में 10 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। इसके अलावा, अधिक गर्मी के कारण होने वाला ऑक्सीडेटिव तनाव पशुओं की रोगों से लड़ने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और वे आगामी बरसात के मौसम में होने वाली विभिन्न बीमारियों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। ऐसे में पशुओं की उत्पादन और प्रजनन क्षमता कम हो जाती है।

डेयरी मवेशियों का ग्रीष्मकालीन प्रबंधन

गर्म वातावरण में मादा पशुओं में मद की अवधि और तीव्रता दोनों काफी कम हो जाती है और वे मदहोश हो सकती हैं। गर्मियों में सांडों के प्रजनन प्रदर्शन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। बैल द्वारा उत्पादित वीर्य की मात्रा और गुणवत्ता ख़राब होती है और उनकी कामेच्छा कम हो जाती है। ये प्रभाव भैंसों में अधिक प्रमुख हैं क्योंकि उनकी काली त्वचा और बालों की कमी अधिक गर्मी के अवशोषण में मदद करती है। इसके अलावा, भैंसों में गायों की तुलना में पसीने की ग्रंथियां कम होती हैं, जिसके कारण उन्हें शरीर से गर्मी निकालने में कठिनाई होती है। इसलिए गर्मी के मौसम के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने और जानवरों के उत्पादन और प्रजनन प्रदर्शन को बनाए रखने में मदद करने के लिए निम्नलिखित कदमों की सिफारिश की जाती है।

1. मूत्र और पानी की निकासी के लिए ढलान वाले फिसलन-रोधी कंक्रीट के फर्श के साथ स्वच्छ और हवादार पशु आवास प्रदान करें। गर्मी के दौरान गर्मी से बचने के लिए पशु घर की छत इन्सुलेटर वाली होनी चाहिए। इसके लिए एस्बेस्टस शीट का उपयोग किया जा सकता है। अधिक गर्मी के दिनों में छत पर 4-6 इंच मोटी घास की परत बिछाई जा सकती है। ये परतें ऊष्मा रोधक के रूप में कार्य करती हैं जिसके कारण पशु घर के अंदर का तापमान कम रहता है। पशुओं के घरों की छत पर सफेद पेंटिंग या चमकदार एल्युमीनियम शीट लगाना सूर्य की रोशनी को प्रतिबिंबित करने में उपयोगी होता है। हवा के समुचित आवागमन और पशुओं को छत की गर्मी से बचाने के लिए पशु घर की छत की न्यूनतम ऊंचाई 10 फीट होनी चाहिए। पशु आवास की खिड़कियों, दरवाजों तथा अन्य खुले स्थानों को बोरियों से ढक

दें तथा इन बोरियों पर पानी छिड़कें। पशु घर में पंखे भी उपयोगी होते हैं और यदि संभव हो तो पंखे लगवाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

2. यदि वातावरण का तापमान अधिक हो तो पशु के शरीर पर तीन से चार बार ठंडे पानी का छिड़काव करें। यदि संभव हो तो भैंसों को मिमियाने के लिए तालाबों या पोखरों में ले जाया जा सकता है। प्रयोगों से पता चलता है कि दोपहर के समय जानवरों पर ठंडे पानी का छिड़काव उनके उत्पादन और प्रजनन प्रदर्शन में सुधार करने में उपयोगी होता है।
3. गर्मी के दिनों में पशुओं द्वारा चारे का सेवन कम कर दिया जाता है। जब पर्यावरणीय जल का तापमान शरीर के तापमान से अधिक होता है, तो पशु सूखा चारा कम खाते हैं क्योंकि सूखे चारे के पचने पर शरीर से बहुत अधिक गर्मी उत्पन्न होती है। इसलिए पशुओं को चारा सुबह या शाम के समय ही देना चाहिए और जहां तक संभव हो हरा चारा अधिक मात्रा में उपलब्ध कराने का प्रयास करें। इस प्रथा के दो फायदे हैं, पहला पशु हरे चारे को बड़े चाव से खाते हैं और इस प्रकार पर्याप्त पौष्टिक आहार लेते हैं, और दूसरे हरे चारे में 70-90 प्रतिशत पानी होता है जो समय-समय पर पानी उपलब्ध कराता रहता है। यदि जानवर चराने जा रहे हों तो उन्हें सुबह और शाम के समय ही चरागाह में ले जाना चाहिए।
4. गर्मियों में पशुओं की भूख कम हो जाती है और प्यास बढ़ जाती है। अतः पशुओं के लिए दिन में कम से कम तीन बार पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अलावा पीने के पानी में थोड़ी मात्रा में नमक भी मिला लें. पीने के लिए ठंडा पानी उपलब्ध कराएं। इसके लिए पानी की टंकी को छायादार स्थान पर रखने की व्यवस्था करें। खुली धूप में पानी की पाइप नहीं बिछानी चाहिए और दिन के समय पानी को गर्म होने से रोकने के लिए भूमिगत पाइप लाइन लगाने का प्रयास करना चाहिए। गर्मियों में जानवरों को ठंडा पानी उपलब्ध कराने के लिए मिट्टी के घड़े का उपयोग किया जा सकता है।
5. पशु आवासों के निकट छायादार वृक्ष अति आवश्यक हैं। यह वृक्ष न केवल जानवरों को छाया प्रदान करता है बल्कि उन्हें गर्मियों की गर्म हवाओं से भी बचाता है।